IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 5, December 2025
Impact Factor: 7.67

शून्य से तीनों शरीरों का निर्माण तथा विज्ञान- एक अध्ययन

इंद्रजीत शर्मा [1] डॉ. सुनील कुमार श्रीवास [2]

[1]शोध छात्र, योग विभाग, मोनाड विश्वविद्यालय, हापुड़

[2]प्रोफेसर, योग विभाग, मोनाड विश्वविद्यालय, हापुड़

indrajeetsharma.dsvv@gmail.com

भूमिका -

ब्रह्म चक्र शून्य चक्र महायोग की जानकारी के बाद, इसके परिचय की शुरुआत "हंस" से होती है |भारतीय सनातन धर्म- संस्कृति का आधार और विज्ञान, वर्ण अक्षरों की प्राकृतिक व्यवस्था (मातृका विज्ञान) पर आधारित है |

हंस से स्वास- प्रस्वास से जीवन क्रम चलता है जिसको सोहं के नाम पुकारा गया है। ब्रह्म की वैज्ञानिक विवेचना संक्षेप में की गयी है। हृदय चक्र तथा तीनों शरीरों का निर्माण होता है ।

मन्त्र तथा मन्त्र की मूल भावना के विषय की जानकारी के साथ-साथ हृदय चक्र के कारण शरीर अष्टदल- अष्ट दिशाओं के अन्दर में आत्मा, गायत्री तथा सप्त ग्रहों का निर्माण कैसे हुआ है |

सूक्ष्म शरीर के निर्माण से षट् चक्रों का निर्माण किस प्रकार हुयी इसकी जानकारी है।

ॐ से पंच तत्वों के वर्णों का निर्माण के साथ-साथ पंच प्राणों के निर्माण की प्रक्रिया का वर्णन किया गया है |

सभी मातृकाओं से स्थूल शरीर के अंगों के निर्माण के प्रक्रिया की जानकारी बताई गई है |

अतिशय महत्वपूर्ण बात सभी वर्ण अक्षरों के मूल भावों की जानकारी है | सद्ज्ञान सनाय सिद्धि रहस्य बताया गया गया है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, December 2025 Impact Factor: 7.67

ब्रह्म चक्र ही शून्य चक्र- पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने गायत्री महा विज्ञान के पेज **124** में शून्य चक्र का वर्णन इस प्रकार किया है। "षट् चक्रों में उपर्युक्त छः चक्र आते हैं। परन्तु सहस्रार या सहस्र दल कमल को कोई कोई लोग सातवाँ- शून्य चक्र मानते हैं।

शून्य चक्र- स्थान - मस्तक । दल - सहस्र। दलों के अक्षर- अं से क्षं तक की पुनरावृत्तियाँ । लोक - सत्य । तत्त्वों से अतीत । बीज तत्त्व- (:) विसर्ग । बीज का वाहन - बिन्दु । देव- परब्रह्म । देव शक्ति - महाशक्ति । यन्त्र-पूर्ण चन्द्रवत् । प्रकाश - निराकार । ध्यानफल - भक्ति, अमरता, समाधि, समस्त ऋद्धि सिद्धियों का करतलगत होना ।"[1]

ब्रह्म चक्र- परम योग का केंद्र ब्रह्म या सहस्रार चक्र है। इसमें अ से क्ष तक सभी वर्ण होते हैं। इस चक्र में प्रारब्ध अर्थात् पूर्व के किए गए कार्यों का लेखा-जोखा संचित होता है। ब्रह्म नाड़ी के माध्यम से हृदय चक्र में आता है और कारण शरीर में भावनाओं के रूप में अनुभव हो कर, सूक्ष्म शरीर में विचार या चिन्तन के रूप धारण कर कुण्डलिनी शक्ति से प्राण अर्जित कर स्थूल शरीर में हार्मोंस के रूप में प्रकट होता है। जिससे आचरण तय होता है और फिर परिणामों का सिलसिला चलता है। जिसके परिणाम पाने या न पाने की इच्छा जीव करता है। स्वीकर करने से सुख और न स्वीकर करने दुःख मिलता है। अन्त में यह सुख- दुःख की अनुभूति पुनः सहस्रार चक्र में जाकर नये कर्म का प्रारब्ध बीज बनता है। यदि सुख-दुःख या व्यक्तिगत लाभ हानि से परे स्थित प्रज्ञ हृदय में होकर सभी कर्मों का स्वयं साक्षी भाव से सामना किया जा सके तो पुनः कर्मों का बीज नहीं बनता है। यदि थोड़ा बनता भी है तो कष्ट या मोह पैदा नहीं होता है।

त्रिशिखिब्रह्मणों उपनिषद-69 में ब्रह्म रन्ध्र-

ब्रह्मणों.....निर्वाणप्राप्तिपद्धतिः ।।[2] अर्थात् ब्रह्म रंध्र तक गमन करने वाली यह वैष्णवी ब्रह्मनाड़ी विद्युत के समान प्रकाश युक्त एवं निर्वाण- प्राप्ति की पद्धति वाली है (अर्थात् मोक्ष प्रदान करने वाली है।)

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, December 2025 Impact Factor: 7.67

स्थूल शरीर के लिए इड़ा नाड़ी -बायाँ स्वर, पिंगला नाड़ी - दायां स्वर मिलकर सुषुम्ना हृदय में श्रीं के रूप में खुलती है । सुषुम्ना नाड़ी में प्रथन चित्रा नाड़ी ब्रह्म ग्रन्थि ह्रीं मस्तिष्क मध्य में खुलकर ज्ञान (सूक्ष्म शरीर) का निर्माण- संचालन करती है और दूसरा वज्रा नाड़ी उपस्थ कर्मेंद्रिय के जड़ भाग में खुलकर प्राण (सूक्ष्म शरीर) का निर्माण- संचालन करती है । चित्रा वज्रा नाड़ी मिलकर हृदय में ब्रह्म नाड़ी का निर्माण करती है और हृदय से सहस्रार तक ब्रह्म नाड़ी चलती है।

ब्रह्म की वैज्ञानिक विवेचन- विराट के चार स्वरूप की वैज्ञानिक विवेचना की बात करें तो यह साफ़ है कि पूरा संसार परमाणुओं से मिलकर बना है। परमाणुओं को भी तोड़नें पर इलेक्ट्रान, प्रोटॉन और न्यूट्रान से मिलकर बना दिखाई देता है और अन्दर देखने पर पता चलता है कि ऊर्जा का केन्द्र न्यूट्रान के अन्दर है और अनन्त काल से वह ऊर्जा दे रहा है परन्तु कभी समाप्त नहीं होता है। यह ऊर्जा या चेतना का केन्द्र सभी परमाणुओं में समान रूप से पाया जाता है। इस चेतना का समान रूप से सभी परमाणुओं में पाए जाने का अर्थ है की वह चेतना अनन्त है कभी कम या ख़त्म नहीं होती है। इसी को ब्रह्म की संज्ञा से पुकारा गया है। इसे स्थिर चेतना भी कहा जाता है। यही सभी का आधार है।

ब्रह्म की इच्छा से न्यूट्रान, प्रोटॉन और इलेक्ट्रान का निर्माण होता रहता है। इसी को ईश्वर खण्ड कहते हैं। इसमें शासन, संचालन तथा प्रेरणा मुख्य तीन विशेषताएँ होती हैं।

यहाँ न्यूट्रान को हृदय, सत, शासन या विष्णु ग्रन्थि, प्रोटॉन को मस्तिष्क, रज संचालन या ब्रह्म ग्रन्थि तथा इलेक्ट्रान को प्रेरणा, प्राण, तम, रुद्र ग्रन्थि आदि नामों से भी पुकारा गया है ।

भगवान खण्ड में जीवों का या विशेष रूप से मनुष्य अपने ढंग से जीवन का निर्माण करने की स्वतंत्रता होती है परन्तु ईश्वरीय शासन में किसी प्रकार की बाधा आने पर ईश्वर की शक्ति से एक अवतार होता है, जो सभी समस्याओं का समाधान करने में सक्षम होता है और कार्य पूरा होने पर

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, December 2025 Impact Factor: 7.67

शक्ति वापस चली जाती है। भगवान खण्ड में एक विधि व्यवस्था भी अवतार देते हैं और साथ-साथ उसमें सुधार के लिए सन्त, महात्माओं, ऋषियों को अधिकार भी दे कर जाते हैं।

शून्य से हकार का निर्माण- श्रीप्रपंचसार तंत्रम्-**4/6** में शून्य से ह का निर्माण-

अस्य बिन्दो:समत्पत्या तदन्तोऽसौ हमच्यते ।।[3]

हकर की उत्पत्ति बिन्दु अर्थात् अनुस्वार से हुई है । अतः यह अनुस्वारयुक्त "ह" है।

श्रीप्रपंचसार तंत्रम्-4/19 में हंस के निर्माण की प्रक्रिया-

बिन्दु (हं) पुरुष है तथा विसर्ग (सः) स्त्री । इसलिये 'हंसः' पुरुष तथा प्रकृतिस्वरूप है । यह सारा संसार पुरुष तथा प्रकृत्यात्मक हंसस्वरूप है।

वह विसर्गस्वरूपा हल्लेखा शक्ति 'सः' जब स्वयं को पुरुष रूप 'हम्' के रूप में तादात्म्यावस्था में आकर सोऽहम् (सः+अहम्) भाव को प्राप्त करती है । यही 'सोऽहम्' परमात्म नामक महामन्त्र कहलाता है ।

श्रीप्रपंचसार तंत्रम्-प्रथम पटल-**2** में ह अक्षर के कार्य निम्न प्रकार लिखी है।

मूलार्णमर्णविकृतीर्विकृतेर्विकृतीरपि .....सर्वानित्थमुवाच ह ।[4]

आभासमूर्ति विष्णु ने कहा- हे ब्रह्मन् ! एक मूल अर्ण है। इस मूल अर्ण के अनेक विकार हैं । इन विकारों के भी कई विकार हैं । इन्हीं मूल, मूल की विकृति और इन विकृतियों की भी विकृतियों से वैदिक तथा तान्त्रिक मन्त्र और इन मन्त्रों की प्रयोग की विधियाँ निष्पन्न होती हैं । और, यह मूलार्ण 'ह' है।

हृदय चक्र का निर्माण प्रक्रिया।

श्रीप्रपंचसार तन्त्र-**4/1** के चतुर्थ पटल में सृष्टि के निर्माण की प्रक्रिया इस प्रकार बताई गई है |

हकार विश्वयोनि-

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, December 2025 Impact Factor: 7.67

अथ व्यवस्थिते .....सततं रूढसंस्थितेः ॥1॥ [5]

समस्त ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, स्थिति और लय शब्दब्रह्मरूप 'ह' में ही होती है |

विवरण के अनुसार-'रूढसंस्थिति' का अर्थ रकार एवं ईकार से 'सतत' का अर्थ बिन्दु (से युक्त होना) है । यह बिन्दु व्यापक है । प्राणात्मक रूढसंस्थित होना, उसका रकार, ईकार तथा अनुस्वार से युक्त होना अर्थात ह्रीं होना ही है। जिस प्रकार परमात्मा का प्रणव अ उ म् से संयुक्त ॐ है, उसी प्रकार शक्ति का प्रणव 'ह् र ई म्' ह्रीं है |

स्वचालित सोहम् से कारण शरीर (हृदयव चक्र) का निर्माण- श्रीप्रपञ्चसारतन्त्रम्-7/1 में मातृका का निर्वाचन-

अथाऽक्षराणामधिदेवतायाः .....विधानम् ।।1।।[6]

संसार को प्रकाशित करने वाली शब्दज्योति मातृका सरस्वती परा, पश्यन्ती, मध्यमा तथा वैखरी के रूप में अभिव्यक्त होती हुई अर्थ का प्रकाशन करती है । मातृका को 'अक्षर' भी कहा जाता है । समस्त संसार 'अक्ष' से वाच्य है, अर्थात् संसार का निर्वचन अ से लेकर क्ष पर्यन्त मातृकाओं द्वारा ही सम्भव है।

ध्यानबिन्दूपनिषद में सोऽहं-

एते नाडीसहस्त्रेषु .....गन्तव्यं ब्रह्मस्थानं निरामयम्॥६५॥[7]

इन हजारों नाड़ियों में प्राण जीवरूप से वास करते हैं । प्राण और अपान के वशीभूत होकर जीव ऊपरनीचे आवागमन करता रहता है ।

प्राण कभी दायें तो कभी बायें मार्ग से गमन करता है, परन्तु चञ्चल प्रकृति का होने से देखने में नहीं आता । हाथों से फेंकी हुई गेंद जैसे इधर-उधर दौड़ती है, उसी प्रकार प्राण और अपान द्वारा भली प्रकार फेंकने से जीव को कभी आराम नहीं मिल पाता । अपान और प्राण की एक दूसरे को खींचने की प्रक्रिया उसी प्रकार की है, जैसे रस्सी में आबद्ध पक्षी अपनी ओर खींच लिया जाता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, December 2025 Impact Factor: 7.67

इस तत्त्व के ज्ञाता को ही योगी कहा जा सकता है। 'ह' कार ध्वनि से प्राण बाहर जाता है और 'स' कार से पुनः अन्दर प्रवेश करता है। 'हंस''हंस' इस प्रकार का 'मन्त्र जप' जीव हमेशा जपता रहता है । इस अजपा-जप की संख्या दिन-रात में इक्कीस हजार छः सौ होती है। इतनी संख्या में मन्त्र जीव हमेशा जपता है । जो योगियों के लिए मोक्ष प्रदान करने वाली है, यही अजपा गायत्री कहलाती है ।

इस (अजपा गायत्री) के संकल्प मात्र से व्यक्ति पापकर्मों से मुक्त हो जाता है। जिस मार्ग से योग साधक सुगमता से ब्रह्मपद को प्राप्त करता है। जिसके सदृश न कोई विद्या है, न जप है और न ही कोई पुण्य, जो पहले न कभी हुआ है और न आगे कभी हो सकेगा ।

हंसोपनिषद-2-13 में सोऽहं और अष्ट दल का रहस्य-

सनत्कुमार .....वेदानुवचनं भवतीत्युपनिषत् ।[8]

सनत्कुमार ने कहा-हे गौतम! महादेव जी ने समस्त धर्मों (उपनिषदों) के मतों को विचार कर श्री पार्वती जी के प्रति जो भी कहा (व्याख्यान दिया) उसे तुम मुझसे सुनो॥

उस (जीव भाव सम्पन्न) हंस की आठ प्रकार की वृत्तियाँ हैं ।

हृदय स्थित जो अष्टदल(अ क च ट त प य श) कमल है, उसके विभिन्न दिशाओं में विभिन्न प्रकार की वृत्तियाँ विराजती हैं।

१. अ से पूर्व दिशा में पुण्यमति का विकास होता है |

२. क आग्नेय दिशा में निद्रा और आलस्य आदि का विकास होता है |

३. च से दक्षिण दिशा में क्रूरमति का विकास होता है |

४. ट से नैर्ऋत्य दिशा में पाप बुद्धि का विकास होता है |

५. त से पश्चिम दिशा में क्रीड़ा वृत्ति का विकास होता है |

६. प से वायव्य दिशा में गमन करने की बुद्धि का विकास होता है |

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, December 2025 Impact Factor: 7.67

७.य से उत्तर दिशा में आत्मा के प्रति प्रीति का विकास होता है |

८.श से ईशान दिशा में द्रव्यदान की वृत्ति, मध्य दल में वैराग्य की वृत्ति, (उस अष्टदल कमल के) केसर (तन्तु) में जाग्रदवस्था, कर्णिका में स्वप्नावस्था, लिङ्ग में सुषुप्तावस्था होती है। जब वह हंस (जीव) उस पद्म का परित्याग कर देता है, तब तुरीयावस्था को प्राप्त होता है। जब नाद उस हंस में विलीन हो जाता है, तब तुरीयातीत स्थिति को प्राप्त होता है ।

इस प्रकार मूलाधार से लेकर ब्रह्मरंध्र तक जो नाद विद्यमान रहता है, वह शुद्ध स्फटिकमणि सदृश ब्रह्म है, उसी को परमात्मा कहते हैं ।

इस प्रकार इस (अजपा मंत्र) का ऋषि हंस (प्रत्यगात्मा) है, अव्यक्त गायत्री छन्द है और देवता परमहंस (परमात्मा) है। 'हं' बीज और 'सः' शक्ति है। सोऽहम् कीलक है ।

इस प्रकार इन षट् संख्यकों द्वारा एक अहोरात्र (अर्थात् २४ घंटों) में इक्कीस हजार छः सौ श्वास लिए जाते हैं। (अथवा गणेश आदि ६ देवताओं द्वारा दिन-रात्रि में २१,६०० बार सोऽहम् मंत्र का जप किया जाता है।)

ब्रह्म विद्योपनिषद-८० में हकार-सद्ज्ञान का महत्व-

सूर्यस्य ग्रहणं .....ध्यायेत्सदा यतिः॥[9]

हे वत्स! सूर्य का (पूजन हेतु) ग्रहण प्रत्यक्ष यजन (सोऽहम् साधना रूप में) कहा गया है। जल में जल होता है, उसी प्रकार से सायुज्यपद सद्ज्ञान के द्वारा ही प्राप्त होता है ।

श्रीप्रपंचसार तंत्रम-4/21-26 **में आत्मा का स्थान हृदय से पंच तत्व, गायत्री और सप्त ग्रहों का निर्माण:**

एवमेषा जगत्प्रसूतिः .....त्वियम् ॥[10]

संसार को जन्म देने वाली यह हृल्लेखा जब अपने प्रकृति, महद तथा अहंकार तत्वों के साथ **24** भागों में परिणत हो जाती है, तब यह सृष्टि की जननी होने के कारण सविता कही जाती है ।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, December 2025 Impact Factor: 7.67

भूर्भुवादि चौबीस वर्गों के रूप में परिणत हृल्लेखा शक्ति अपने गायकों की रक्षा करने के कारण गायत्री कही जाती है।

जिस प्रकार स्वरों से अतिरिक्त शेष कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग तथा यवर्ग नामक छह वर्गों का कोई अन्य कारण नहीं है, अर्थात् इनका जन्म स्वरों से ही हुआ है, उसी प्रकार मंगल आदि छह ग्रहों का सूर्य के अतिरिक्त कोई अन्य कारण नहीं है, सभी ग्रह सूर्य के ही कार्य है।

यह गायत्री शक्ति सात भागों में विभक्त होकर सप्तग्रहात्मिका बनती है। मातकारूपिणी यह हल्लेखा शक्ति सात भागों में विभक्त होकर सूर्य, सोमादि सात ग्रहों का स्वरूप बनती है । सप्तग्रहस्वरूपा बनने पर सोलह स्वरों(अ से अ) से सूर्य, क वर्गसे मंगल, च वर्ग से शुक्र, ट वर्ग से बुध, त वर्ग से बृहस्पति, प वर्ग से शनि तथा य वर्ग से सोम को जन्म देती है |

कारण शरीर द्वितीय वलय का निर्माण:-

पंचब्रह्मोपनिषद-**10.14** में अष्ट दल-

वामदेव महाबोधदायकं पावकात्मकम्.....अक्षरसमायुक्तमष्टपत्रान्तरस्थितम|[11]

सभी को सौभाग्य प्रदान करने वाले, मनुष्यों के सभी कर्मों के फल प्रदाता तथा (अ, क, च, ट,त, प, य, श) इन आठ अक्षरों अथवा आठ क्षरित न होने वाले तत्वों तथा अष्टदल (पंखुड़ियों) से युक्त कमल अर्थात् हृदय रूपी कमल में निवास करने वाले हैं|

ध्यानबिन्दोपनिषद-93/1-14 में अष्ट दिशाओं में चेतन के गमन से भिन्न -भिन्न प्रकार की भावनाओं का निर्माण

अथात्मनिर्णयं .....भवतीदमेवात्मदर्शनोपाया भवन्ति|[12]

हृदय स्थल में आठ दल (अ, क, च, ट, त, प, य और श) का कमल है,उसके बीच रेखा वलय बनाकर जीवात्मा ज्योतिरूप होकर अणुमात्र स्वरूप में निवास करता है । वह सर्वज्ञाता,सब कुछ करने वाला है और सब कुछ उसी में प्रतिष्ठित है। उसका ऐसा विचार है कि सभी चरित्रों का मैं ही

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, December 2025 Impact Factor: 7.67

कर्ता, भोक्ता, सुखी, दु:खी,काना, लँगड़ा, बहरा,गूंगा, दुबला और मोटा हूँ; इस प्रकार उसका स्वतन्त्र व्यवहार रहता है।

*उस अष्टदल कमल का पूर्व दिशा वाला दल सफेद रंग का है, उस दल में रहते हुए धर्म और भक्तिभाव में मति (श्रद्धा) रहती है |

*जब आग्नेय दिशा के लाल रंग के दल में निवास होता है, तब मति निद्रा और आलस्य से युक्त हो जाती है|

जब दक्षिण दिशा के काले रंग के दल में निवास होता है, तब द्वेषभाव और क्रोधी स्वभाव की मति रहती है|

*नैर्ऋत्य दिशा के नीले रंग वाले दल में निवास करने पर पाप कर्मों और हिंसक वृत्ति वाली मति रहती है|

*जब स्फटिक वर्ण वाले पश्चिम दल में निवास रहता है, तब क्रीड़ा और विनोद में अभिरुचि उत्पन्न हो जाती है।

*वायव्यकोण के माणिक्य वर्ण वाले दल में निवास होने पर घूमने-फिरने और वैराग्य भाव की ओर झुकाव होता है|

*जब उत्तर के पीले रंग के दल में निवास करता है, तो सुख-साधन और सजने-संवरने में अभिरुचि रहती है ईशान कोण के वैदूर्यमणि-रंग के दल में रहने पर दान-पुण्य और अनुग्रह करने में अभिरुचि जागती है|

बाद में परमात्मतत्व की प्राप्ति होती है, इसी मार्ग से मोक्ष और आत्मदर्शन दोनों की प्राप्ति सम्भव है ।।

सूक्ष्म शरीर का निर्माण व स्वरूप-

'अक्षर' शब्द का अर्थ-'अक्षर' शब्द का अन्तिम वर्ण 'र' अग्नि बीज है । इसका स्वभाव प्रकाशित

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, December 2025 Impact Factor: 7.67

करना और प्रकाशित होना है। अ-क्ष मय संसार पराशक्ति के 'रकार' रूप तेजस से प्रकाशि है। यह 'अक्ष' और उसे प्रकाशित करने वाला 'र' भगवती का अपना ही स्वरूप जो कुछ भी प्रकाश्य एवं प्रकाश है, वह स्वयं परा ही है।

अक्षरात्मिका पराशक्ति को सरस्वती भी कहते हैं, क्योंकि वह रसस्वती करने वाली विश्व-अक्ष को जीवनरस देने वाली रसात्मिका शक्ति है। इसी का शारदा भी है | क्योंकि यह 'शार+दा' है । क्षरणशील पदार्थ को 'शार' कहते है। समस्थ संसार कर्म 'शार' है । विनाशशील कर्मों के फल की प्रदात्री होने के कारण परा शक्ति को शारदा कहा जाता है । पराशक्ति 'ब्रह्मविद्या' के रूप में कर्मों और कर्म फलों को खण्डित करके साधक को मोक्ष भी प्रदान करती है, इसलिये भी इसे 'शारदा' कहा जाता है |

अष्ट अक्षरों से सूक्ष्म शरीर अर्थात् षट्चक्रों का निर्माण-

१ अ १६ स्वर बीज अक्षरों का निर्माण करते हैं |अ अक्षर विशुध्दाख्य चक्र में अ से अः ब्रह्मणत्व से परिपूर्ण होने के कारण लोक कल्याणकारी है, भक्ति भावना वाला और पूर्व दिशा व सूर्य ग्रह है |

२ क, च और ट अक्षर अनाहत चक्र में क से ठ १२ व्यंजन वर्ण अक्षरों का निर्माण करते हैं। यह क्षत्रियत्व से परिपूर्ण होने के कारण प्रशासनिकता से परिपूर्ण है क्रमश आग्नेय, दक्षिण तथा नैऋत्य कोण और क्रमशः मंगल, शुक्र तथा बुध ग्रह हैं|

३.त और प वर्ण अक्षर मणिपुर चक्र में ड से फ सहित १० व्यंजन वर्ण अक्षरों का निर्माण करते हैं । दिशा पश्चिम और वायव्य, बृहस्पति और शनि ग्रह हैं । वाणिज्य और व्यवसाय की अभिरुचि विकसित करता है-यह वैश्य वर्ण से परिपूर्ण है |

४. य व्यंजन वर्ण ६ अक्षरों का स्वधिस्ठान चक्र में ब से ल का निर्माण करते हैं | शूद्र वर्ण से परिपूर्ण होने के कारण सेवा कार्य में कुशल है | उत्तर दिशा और ग्रह चन्द्र है |

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, December 2025 Impact Factor: 7.67

५. श व्यंजन वर्ण, ४ वर्ण अक्षरों से मूलाधार चक्र का निर्माण करते हैं | मूलाधार चक्र में व, श, ष और स होते हैं | ईशान दिशा और शुषुम्ना नाड़ी है | शूद्र वर्ण से परिपूर्ण होने के कारण सेवा कार्य में कुशल है|

६. ह और क्ष वर्ण अक्षर से आज्ञा चक्र का निर्माण होता है | यह शिव का क्षेत्र है इसके केंद्र में ॐ है जिसका गुण प्रज्ञा है । यहीं पीयूस ग्रन्थि होती है जिससे स्थूल शरीर के विभिन्न अन्त: स्रावी ग्रंथियों को नियमित और नियंत्रित किया जाता है |

षट्चक्रों में स्थित सभी वर्ण अक्षर उदित होते हैं। पञ्च महा प्राणों और पञ्च लघु प्राणों के साथ-साथ सभी **24** तत्वों का भी वाह्य जगत के लिए इन्हीं चक्रों से निर्माण एवं संचालन होता है।

इन्हीं चक्रों में पंच तत्व, पंच तन्मात्राऐं, पंच ज्ञानेंद्रिय, पंच कर्मेंद्रियों के साथ मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार, जीव के उपयोग के लिए प्रतिष्ठित होता है। जिसमें मानव को सुख-दुःख-, भूख-प्यास-, अपना-पराया आदि की अनुभूति होती है।

मातृका चक्र विवेक-१/१ में श्री और मात्रिका की एकता-

श्रीचक्र .....यन्त्रमूलमनु मातृका |[13]

श्रीचक्र और मातृका: मात्रिकाचक्र विवेक में टीकाकार ने श्री शिवानन्द ने मातृका पद को वर्णात्मक मूल मन्त्र एवं मातृका चक्र को श्रीचाक्र के नाम से स्वीकार किया है-

स्वचालित सोहम् के ॐ से पंच तत्वों के निर्माण की प्रक्रिया-

श्रीप्रपञ्चसारतन्त्रम्: के चतुर्थ पाटल-**21,22** में ॐ तथा ॐ से वर्ण और पञ्च तत्वों का वर्गीकरण इस प्रकार दिया है|

सोऽहमित्यस्य .....संसिद्ध्यै ।।[14]

इस परमात्म मन्त्र 'सोऽहम्' से सकार और हकार का लोप हो जाने और "एङः पदान्तादति' इस नियम से पूर्वरूप सन्धि होने से यही सोऽहम् मन्त्र 'ओम्' रूप प्रणव बन जाता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, December 2025 Impact Factor: 7.67

'ॐ' शब्द में अ, उ, म् तीन अक्षर हैं | अ, उ तथा म् के रूप में विभक्त ॐ के अन्तिम भाग अर्थात 'म्' से आकाश, वायु, अग्नि, जल तथा पृथ्वी नामक पंचभूत, मध्यांश अर्थात 'उ' से सूर्य, सोम तथा अग्नि एवं पूर्व भाग 'अ' लोक के समस्त शब्द उत्पन्न हुए |

1.पृथ्वी- ऊद् अर्थात् उ तथा ऊ, गदादि अर्थात् ग ज ड द ब तथा ओ एवं ल तथा ळ ये दस वर्ण पार्थिव (पृथ्वी);

2.जल- नासिकावाचक वर्ण ॠ, ॡ, वर्गों के चतुर्थ वर्ण घ, झ, ढ, ध तथा भ, औ, व तथा स ये दस वर्ण जलीय;

3.अग्नि- दृष्टिवाचक अर्थात् इ, ई, ऐ, वर्गों के द्वितीय वर्ण ख, छ, ठ, थ, फ, तथा र एवं क्ष ये दस वर्ण आग्नेय हैं ।

4.वायु- अ द्वन्द्व, अर्थात् अ आ, योनि अर्थात् ए, कादि अर्थात् क च ट त प य एवं ष ये दस वर्ण वायवीय;

5.आकाश- कपोल के वाचक वर्ण ऌ ॡ, बिन्दु अर्थात् अनुस्वार, वर्गों के पंचम अर्थात् ङ ञ ण न तथा म तथा श एवं ह ये दस वर्ण आकाशतत्त्वात्मक हैं ।

मन्त्रविद् को चाहिये कि वह मन्त्रों के आवश्यकतानुसार इन वर्गों के तत्त्वों को ध्यान में रखते हुए प्रयोग करे ।

पञ्च प्राणों का वर्ण और तत्व- ध्यांबिन्दोपनिषद-९४-१०० में इस प्रकार वर्णित है-

चतुष्पथसमायुक्तमहाद्वारगवायुना ..... तु प्रणवेन समुच्चरेत्|[15]

1. 'य' कार जो नीले बादलों के समान है, वह प्राण का बीज है।

2. 'र' कार आदित्यरूप वर्ण अग्निरूप अपान का बीज है|

3. 'ल' कार बन्धूक पुष्प के रंग वाला पृथ्वीरूप व्यान का बीज है।

4. 'व' कार शंख के रंग वाला जीवरूप उदान का बीज है|

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, December 2025 Impact Factor: 7.67

5. 'ह' कार स्फटिक प्रभायुक्त आकाश रूप 'समान' का बीज है।

हृदय, नाभि, नासिका, कान तथा पैर का अंगुष्ठ-ये समान प्राण के स्थान हैं|यह समान बहत्तर हजार नाड़ियों तथा शरीर के अट्ठाईस करोड़ रोम कूपों में रहता है|समान और प्राण भिन्न-भिन्न नहीं, अपितु एक हैं, दोनों एक ही जीव हैं। चित्त को दृढ़ता से समाहित कर पूरक, कुम्भक, रेचक तीनों क्रियायें सम्पन्न करे। हृदयकमल के कोटर में धीरे-धीरे सबको आकर्षित करके, प्राणवायु और अपान को अवरुद्ध करते हुए प्रणव (ॐकार) का उच्चारण करे |

स्थूल शरीर के विभिन्न अंगों का निर्माण- श्रीप्रपञ्चसारतन्त्र-**1/1** में इस प्रकार दिया है|

अकचटतपयाद्यैः ..... विधीयते ।।[16]

भोगमोक्षप्रदायनी शारदा का स्थूल शरीर अवर्ग आदि सात वर्गों में विभक्त **51** मातृकाओं से निर्मित है ।

1.अ वर्ग की अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ए, ऐ, ओ,औ, अं और अः-ये **16** मातृकाएँ भगवती के मुखमण्डल के क्रमशः मौलिक (ब्रह्मरन्ध्र), मुख, दक्षिण नेत्र, वाम नेत्र, दक्षिण कर्ण, वाम कर्ण, दक्षिण नासापुट, वाम नासापुट, दक्षिण कपोल, वाम कपोल, ऊर्ध्व ओष्ठ, अधः ओष्ठ, ऊर्ध्व दन्तपंक्ति, अधः दन्तपंक्ति, जिह्वा और ग्रीवा ये **16** अंग हैं |

2.क वर्ग की क्रमशः क, ख, ग, घ, ङ, ये पांच मातृकाएँ क्रमशः उनकी दक्षिण बाहु के बाहुमूल, कूर्पर, मणिबन्ध, अंगुलिमूल और अंगुलियों के अग्रभाग हैं ।

3.च वर्ग की च, छ, ज, झ और ञ, ये पाँच मातृकाएँ भगवती के वाम बाहु के क्रमशः बाहुमूल, कपूर, मणिबन्ध, अंगुलिमूल और अंगुल्यग्र भाग हैं।

4.टवर्ग की क्रमशः ट, ठ, ड, ढ, और ण, इन पाँचों मातृकाओं से भगवती पराम्बा के दक्षिण पाद की जंघा, जानु (घुटना), गुल्फ (टखना), अंगुलिमूल तथा अंगुल्यग्र का निर्माण हुआ है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, December 2025 Impact Factor: 7.67

इसी तरह त वर्ग की क्रमशः त, थ, द, ध तथा न, इन पाँच मातृकाओं से वाम पाद के उक्त अंगों का निर्माण हुआ है।

5.प वर्ग की क्रमशः प, फ, ब, भ और म ये पाँच मातृकाएँ भगवती के दक्षिण कुक्षि, वामकुक्षि, पृष्ठ, नाभि तथा जठर नामक पाँच मध्य अंग हैं ।

6.य वर्ग की क्रमशः य, र, ल, व, श, ष, स, ह, ळ तथा क्ष ये दस मातृकाएँ भगवती के हृदय प्रदेश के क्रमशः हृदय, दक्षिण स्कन्ध, वामस्कन्ध, ककुद्(गर्दन) हृदय से दक्षिण कर पर्यन्त भाग, हृदयादि वाम कर पर्यन्त, हृदय से लेकर दक्षिण पाद पर्यन्त भाग, हृदयादि वामपाद पर्यन्त भाग, नाभि से हृदय पर्यन्त भाग और हृदयादि भ्रूमध्य भाग हैं ।

हकार से षड्ऊर्मियों तथा छह प्रथम स्वरों की उत्पत्ति-

महिमाशाली हकार की बुभुक्षादि छह 'ऊर्मियों से क्रमशः अ, आ, इ, ई, उ तथा ऊ ये छह स्वर उत्पन्न हुए हैं ।

ऋ, ॠ, ऌ तथा ॡ ये चार स्वर रकार से उत्पन्न वायु आदि चार भूतों से क्रमशः उत्पन्न हुए।

ईकार के इन छह अंगों से क्रमशः ए, ऐ, ओ, औ, अं तथा अः ये छह स्वर उत्पन्न हुए और शेष ककारादि हल् वर्ण इन्हीं सोलह स्वरों से उत्पन्न हुए हैं । इस प्रकार भगवती परा शक्ति 'ह्रीं' सोलह अंगों वाली मानी जाती है ।

मातृकाओं के मूल गुण।

मातृकाओं के मूल गुण- अक्षमालिका उपनिषद**-5** में माला गुथने के महत्व पर प्रकश डालते हुए ऋषि मातृकाओं के मूल भावार्थ अर्थ रहस्य को बताते हैं। जिससे शरीर प्रमुख अंग बने हैं -

ओमंकार मृत्युंजय सर्वव्यापक प्रथमेऽसे प्रतितिष्ठ। .....ॐ क्षंकार परापरतत्त्वज्ञापक परंज्योतीरूप शिखामणौ प्रतितिष्ठ॥[17]

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, December 2025 Impact Factor: 7.67

हे अकार! तुम मृत्यु को जीतने वाले हो, सर्वव्यापी हो ।

हे आकार ! तुम आकर्षण शक्ति से ओत-प्रोत सर्वत्र संव्याप्त हो ।

हे इकार! तुम पुष्टि-प्रदाता हो तथा क्षोभरहित हो ।

हे ईकार ! तुम वाणी को प्राञ्जलता प्रदान करने वाले हो तथा निर्मल हो ।

हे उकार! तुम सभी को सभी तरह से बलप्रदाता हो एवं सारयुक्तों में सर्वश्रेष्ठ हो ।

हे ऊकार! तुम उच्चारण करने वाले तथा दुस्सह अर्थात् न सहे जा सकने वाले हो ।

हे ऋकार ! तुम संक्षोभ अर्थात् चल-चित्तता को करने वाले एवं चंचल हो ।

हे ॠकार ! तुम सम्मोहित करने वाले एवं उज्ज्वल हो ।

हे ऌकार! तुम विद्वेष को प्रकट कर देने वाले, सभी कुछ जानने वाले अत्यन्त गोपनीय हो।

हे ॡकार! तुम मोहकारी हो ।

हे एकार! तुम सभी को वश में करने वाले तथा शुद्ध सत्य हो ।

हे ऐकार! तुम शुद्ध एवं सात्विक हो तथा पुरुषों को अपने वश में करने वाले हो ।

हे ओकार! तुम अखिल वाङ्मय (समस्त शब्द समूह) हो एवं नित्य पवित्र हो ।

हे औकार! तुम भी अक्षर समूह रूप सभी को वश में करने वाले, शान्त स्वरूप हो ।

हे अंकार! तुम हाथी आदि को अपने वश में करने वाले, मोहित करने वाले हो ।

हे अ:कार! तुम मृत्यु विनाशक एवं रौद्र (अति भयानक) हो ।

हे ककार! तुम सम्पूर्ण विषों को विनष्ट करने वाले एवं कल्याण-प्रदाता हो ।

हे खकार! तुम सभी को क्षुभित करने वाले एवं सर्वत्र व्याप्त रहते हो ।

हे गकार! तुम सभी विघ्नों को शांत करने वाले एवं बड़ों में भी अति विशाल हो ।

हे घकार ! तुम सौभाग्य-प्रदाता और स्तम्भन गति को अवरुद्ध करने वाले कर्ता हो ।

हे ङ कार! तुम सभी विषयों के विनाशक एवं उग्र भयानक हो ।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, December 2025 Impact Factor: 7.67

हे चकार ! तुम अभिचार नाशक तथा अत्यन्त क्रूर हो।

हे छकार! तुम भूत विनाशक एवं भयानक हो ।

हे जकार! तुम कृत्या आदि (डाकिनी आदि) के नाशक एवं दुर्धर्ष हो।

हे झकार! तुम भूत नाशक हो।

हे अकार ! तुम मृत्यु को मथित कर देने वाले हो ।

हे टकार! तुम समस्त रोगों के विनाशक एवं सुन्दर हो ।

हे ठकार! तुम चन्द्र स्वरूप हो।

हे डकार! तुम गरुड़ के सदृश विष नाशक तथा सुन्दर हो ।

हे ढकार। तुम समस्त प्रकार के सम्पत्ति प्रदाता एवं सौम्य-शालीन हो।

हे णकार ! तुम सभी सिद्धियों के प्रदाता एवं मोहित (मोहयुक्त) करने वाले हो ।

हे तकार! तुम धन एवं धान्य आदि सम्पत्तियों के देने वाले एवं सदैव प्रसन्नमय हो ।

हे थकार! तुम धर्म की प्राप्ति कराने वाले एवं निर्मल हों ।

हे दकार! तुम पुष्टिकर्ता एवं वृद्धिकर्ता हो, सुन्दर दृष्टिगोचर होने वाले हो ।

हे धकार! तुम विष एवं ज्वर विनाशक हो तथा बहुत विशाल भी हो ।

हे नकार ! तुम भोग, मोक्ष-प्रदाता एवं शान्तरूप हो ।

हे पकार! तुम विष और विघ्नों के नाशक एवं कल्याणकारी हो ।

हे फकार! तुम अणिमा, महिमा एवं गरिमा आदि अष्ट सिद्धियों से सम्पन्न एवं प्रकाशमय हो ।

हे बकार ! तुम समस्त दोषों के हरणकर्ता एवं सौंदर्यमय हो, इस उन्तालीसवें अक्ष में प्रतिष्ठित हो जाओ। हे भकार! तुम भूत-बाधा का शमन करने वाले एवं भयानक हो ।

हे मकार ! तुम विद्वेष करने वाले को संमोहित कर लेने वाले अथवा विद्वेषी और मोह करने वाले हो ।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, December 2025 Impact Factor: 7.67

हे यकार! तुम सर्वत्र संव्याप्त एवं परम पवित्र हो ।

हे रकार ! तुम दाह (जलन, तपन) उत्पन्न करने वाले एवं विकृत हो ।

हे लकार ! तुम विश्व का पोषण करने वाले एवं तेजस्वी हो।

हे वकार ! तुम सबको तृप्त (पुष्ट) करने वाले एवं निर्मल हो ।

हे शकार! तुम सभी तरह के फलों को देने वाले एवं पवित्र हो।

हे षकार ! तुम धर्म, अर्थ एवं काम को देने वाले तथा श्वेत-शुभ्र हो ।

हे सकार ! तुम समस्त वस्तुओं के कारण तथा सभी वर्गों से सम्बन्धित हो।

हे हकार! तुम समस्त वाङ्मय (समस्त अक्षरों या साहित्य) के स्वरूप वाले एवं निर्मल हो।

हे ळकार ! तुम सम्पूर्ण शक्तियों के प्रदाता एवं प्रधान हो, हे क्षकार ! तुम परात्पर तत्त्व को बतलाने वाले एवं परम ज्योति स्वरूप हो ।

उपसंहार-

भारतीय परम्परा ने शून्य को ब्रह्म माना है जिसके आधार पर हृदय चक्र में प्रथम वलत दिव्य शरीर का निर्माण होता है। इसी में गायत्री, हंस कला, श्री कला तथा वेदों का ज्ञान गायत्री से प्रकट होता है। द्वितीय वलय अकचटतपयश अष्ट दल से कारण शरीर (संस्कार) का निर्माण होता है जो सूक्ष्म शरीर के लिए भावनायें प्रवाहित करता है। सूक्ष्म शरीर में विचार एवं प्राण के लिए विशुद्धाख्य(अ से अः **16** वर्ण), अनाहत(क से ठ **12** वर्ण), मणिपुर(ड से फ **10** वर्ण), स्वाधिस्ठान(ब से ल **6** वर्ण), मूलधार(व से स **4** वर्ण) और आज्ञा(ह ळ क्ष **3** वर्ण) चक्र सहित छः चक्र बनते हैं। यहीं से विचारों और प्राणों का संचालन होता रहता है।

स्थूल शरीर में स्वाद और भार होता है। मुखमंडल विशुद्धाख्य के १६ वर्णों से बनता है। दायाँ हाथ क से ङ बायाँ हाथ च से ञ अक्षरों से निर्मित होता है। दायाँ पैर ट से ण बायाँ पैर त से न अक्षरों से निर्मित होता है । पृष्ठ भाग-ब, नाभि-भ, उदार-म, हृदय-य, दायाँ कन्धा-र, बायाँ कन्धा-

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, December 2025 Impact Factor: 7.67

ल, ग्रीवा-व, हृदय से दायाँ हाथ-श, हृदय से बायाँ हाथ-ष, हृदय से दायाँ पैर-स, हृदय से बायाँ पैर-ह, नाभि से हृदय- ळ, हृदय से ललाट-क्ष से निर्माण होता है। यही शून्य से तीनों शरीरों के निर्माण का ज्ञान विज्ञान है।

हृदय में स्थित आत्मा के संकल्प से ही इच्छा की उत्पत्ति होती है, उसी इच्छा की पूर्ति के लिए प्राणमय कोश (कुण्डलिनी शक्ति) से प्राण का उत्पादन होता है। इस प्राण को विषय की प्राप्ति के लिए ईश्वरीय न्याय के आधार पर प्रमाणित करना होता है। यह प्राण ही संसार के समस्त वस्तुओं का निर्माण करता है। यही प्राण और विचार शरीर में गलत दिशा पकड़ने पर वात-पित्त कफ को कुपित कर देता है अर्थात् विभिन्न रोगों के रूप में यह प्राण परिवर्तित हो जाता है। सही दिशा होने से तीनों शरीरों को स्वस्थ किया जा सकता है। हंस से हकार– सद्ज्ञान (प्रत्यक्ष, परोक्ष तथा सूक्ष्म रूप से एक जैसा व्यवहार करना ही सद्ज्ञान है। अर्थात अपने विचार से अपने विचार के विरोध में न विचार करना या न कार्य करना ही सद्ज्ञान होता है। साथ ही साथ अपने परिश्रम से उपजे साधनों का अपने, अपने परिवार तथा समाज के विकास के लिए पूरा पूरा ठीक ठीक सदुपयोग करना ही सद्ज्ञान की सिद्धि है।) और स कार- समय सिद्धि (अपने द्वारा निर्धारित समय पर कार्य करना ही समय सिद्धि होती है।) इसका पालन करने से तीनों शरीर स्वस्थ, आत्मिक प्रगति और कुशल व्यवहार किया जा सकता है जिससे जीवन कि सभी समस्ययों का निदान सम्भव है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

क्रम	ग्रंथ का नाम	लेखक	प्रकाशक
1.	गायत्री महाविज्ञान, पृ. सं.-124	पं. श्रीराम शर्मा आचार्य	युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, December 2025 Impact Factor: 7.67

2. त्रिशिखिब्रह्मणोपनिषद-९६ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

3. श्रीप्रपञ्चसारतन्त्रम्-४/६ डा रामचन्द्र पुरी चौखम्भा संस्कृति प्रतिष्ठा

4. श्रीप्रपञ्चसारतन्त्रम्-२/४ डा रामचन्द्र पुरी चौखम्भा संस्कृति प्रतिष्ठा

5. श्रीप्रपञ्चसारतन्त्रम्-४/१ डा रामचन्द्र पुरी चौखम्भा संस्कृति प्रतिष्ठा

6. श्रीप्रपञ्चसारतन्त्रम्-७/१ डा रामचन्द्र पुरी चौखम्भा संस्कृति प्रतिष्ठा

7. ध्यानबिन्दूपनिषद ५८ से ६८ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

8. हंसोपनिषद- २ से १३ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

9. ब्रह्म विद्योपनिषद-८० पं. श्रीराम शर्मा आचार्य युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

10. श्रीप्रपंचसार तंत्रम्-4/21-26 डा रामचन्द्र पुरी चौखम्भा संस्कृति प्रतिष्ठा

11. पंचब्रह्मोपनिषद-१०-१४. पं. श्रीराम शर्मा आचार्य युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

12. ध्यानबिन्दोपनिषद-९३/१-१५ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

13. मातृका चक्र विवेक-१/१ पं.कृष्णानन्द बुधौलिया पितंबरा पीठ संस्कृत परिषद-दतिया

14. श्रीप्रपञ्चसारतन्त्रम्-४/२१-२२ डा रामचन्द्र पुरी चौखम्भा संस्कृति प्रतिष्ठा

15. ध्यानबिन्दूपनिषद-९४-१०० पं. श्रीराम शर्मा आचार्य युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

16. श्रीप्रपञ्चसारतन्त्र- १/१ डा रा।मचन्द्र पुरी चौखम्भा संस्कृति प्रतिष्ठा

17. अक्षमालिका उपनिषद-५ पं.श्रीराम शर्मा आचार्य युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट